प्रेस विज्ञप्ति

आचार्य महाप्रज्ञ चातुर्मास व्यवस्था समिति

सरदारशहर 331 401

Email : terapanthpr@gmail.com * Fax : 01564-220 233

साधु वेश के साथ क्लेश को बदले

– आचार्य महाश्रमण

सरदारशहर 4 जून, 2010

जो तन से, वचन से और मन से किसी दूसरे व्यक्ति को तकलीफ नहीं देते वे सही अर्थ में साधु होते हैं। साधु का वेश हो और संयम न हो तो वेश के साथ अन्याय हो जाता है। जिस साधु ने अपने वेश के साथ क्लेश को नहीं बदला, राग-द्वेष को नहीं बदला तो वह केवल वेश में ही साधु हो सकता है।

उक्त विचार आचार्यश्री महाश्रमण ने सरदारशहर के किशनलाल नाहटा के निवास पर उपस्थित श्रद्धालुओं को संबोधित करते व्यक्त किये।

आचार्यश्री महाश्रमण ने कहा कि साधु में साधना होनी चाहिए। साधु को कंचन कामिनो का त्यागी होना चाहिए। जो साधु धन और स्त्री का त्यागी होता है वह परमात्मा का दूसरा रूप होता है। साधु को धन आदि से बचना चाहिए साधु को शील की साधना करनी चाहिए।

आचार्यश्री महाश्रमण ने संस्कृत साहित्य का उल्लेख में विनम्रता को परिभाषित करते हुए कहा कि जो संयम पर्याय में बड़ा है, जो विद्या में बड़ा और जो उम्र में बड़ा है उसके प्रति विनय का भाव होना चाहिए।

आचार्यश्री महाश्रमण ने यह भी कहा साधु स्वयं तारने वाले होते हैं और दूसरों को दीक्षा देकर तारने का प्रयास करते हैं अपने ज्ञान से प्रवचन के माध्यम से भी दूसरों का भला करते हैं।

इस अवसर पर स्थानीय राजेन्द्र विद्यालय के प्रधानाचार्य पृथ्वीचंद ने अपने विचार व्यक्त किये व आचार्यश्री महाश्रमण को विद्यालय में पधारने की अर्ज की। डालचन्द चिण्डालिया ने अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार ने किया।

शीतल बरड़िया
(मीडिया संयोजक)